

राफज़ियत, नासबियत और यज़ीदियत का तहकीकी जायज़ा

यज़ीद बिन मुआविया के झूठे फजाइल बयान करना।	यज़ीदियत:	सय्यदना अली का बुग़ज़ और उनकी गुस्ताखियाँ करना	नासबियत:	सहाबा किराम का बुग़ज़ और उनकी गुस्ताखियाँ करना।	राफज़ियत:
--	-----------	--	----------	---	-----------

मेरे मुसलमान भाईयों! शैतानी वसवसों के बावजूद अपनी मौत से पहले पहले सिर्फ एक मर्तबा इस तहरीर को अव्वल ता आखिर लाज़मी, लाज़मी, लाज़मी पढ़ लें!

यह अहम तहकीक सिर्फ "कुरआन और सहीह अहादीस" पर मुशतमिल है: अलहम्दुलिल्लाह! इस तहरीर में राफज़ियत नासबियत और यज़ीदियत जैसी मुहलक रुहानी बीमारियों का इलाज सिर्फ कुरआन और सहीह अहादीस से किया जा रहा है। रही हकीकत तारीख तबरी, तारीख इब्ने असाकिर, तारीख इब्ने कसीर और तारीख इब्ने खल्लदून के चन्द बे सनद, ज़ईफ़ व मनगढ़ंत वाकिआत और बे बुनियाद रिवायात की, तो अकल रखने वालों के लिये सिर्फ इतना अर्ज कर देना काफी है कि मुहद्दीसीन-ए-इजाम के इल्मी मैदान में इन झूठे तारीखी हवालों की हैसियत खोटे सिक्कों की मानिन्द है।

नोट: के महबूब, हमारे निहायत ही शफीक आका, इमामे आजम, इमामे कायीनात सय्यिदुल अव्वलीन वल आखिरीन, इमामु अंबिया वल मुर्सलीन, शफ़िउल मुज्जबीन, रहमतुल लिल आलमीन, सय्यिदना मुहम्मदुर रसूलुल्लाह की तमाम सहीह अहादीस के नबर्स उलेमा-ए-हरमैन और बैरुत की जारी शुदा इंटरनेशनल नम्बरिंग के मुताबिक हैं। और इस तहरीर में सिर्फ वही अहादीस शामिल हैं जिनके सही होने पर बरें सगीर पाक व हिन्द में "अहले सुन्नत" का दावा करने वाले तीनों मसालिक: ❶ बरेल्वी ❷ देओबंदी और ❸ सलफी (अहले हदीस) बिल्कुल इत्तिफ़ाक़ करते हैं।

नोट: ने उलेमा और दर्वेशों की तालीमात के बजाय अपनी वहीह (कुरआन और उसकी तफ़सीर यानी सहीह अहादीस) की हिफ़ाज़त की जिम्मेदारी खुद ली है:

नोट: "इज्मा-ए-उम्मत" को हज्जत मानना दरअसल कुरआन व सहीह अहादीस का हुक़म मानने में ही दाखिल है: [سورة الحجر: آيت نمبر 9] (सुरहतुल हिज: आयत नं 9)

(सुरहतुल निसा: 115), [النساء : 115], [المستدرک للحاکم : حديث نمبر 399] (हदीस नं 399) अलमुस्तदरक लिल हाकिम: हदीस नं 399) अगर कुरआन व सुन्नत (सहीह हदीस) और इज्मा-ए-उम्मत की मुखालिफ़त ना आये तो जदीद मसाइल के हल के लिये "कयास या इज्तिहाद" करना जायज़ है: [المصنف لابن ابی شيبه : حديث نمبر 22,990] (अलमुसन्नफ लिइब्ने अबी शैबह: हदीस नं 22, 990)

राफज़ियत का रद्द: के महबूब के "तमाम सहाबा" का बिल-ए-एहताराम हैं: ने कुरआने हकीम में वाजेह तौर पर इर्शाद फरमाया:

① مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ تَرَاهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا سِيِبَاهُمْ فِي وُجُوهِهِمْ مِنْ أَثَرِ السُّجُودِ ذَلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرَةِ وَمَثَلُهُمْ فِي الْإِنْجِيلِ [سورة الفتح : آيت نمبر 29] (سुरहतुल फतह: आयत नं 29)

तर्जुमा आयत-ए-मुबारका: "मुहम्मद के रसूल हैं और जो लोग उनके साथी हैं (ये तमाम हस्तियाँ) काफ़िरों पर (मुकाबिले में) बड़े सख्त (बहादुर) और आपस में बड़े रहमदिल हैं, तुम उन्हें देखोगे भी (तो) रकूज करते हुए (और) कभी सज्दा (की हालत) में, (इन अच्छे आमाल से वो) के फज़ल और उसकी रजा के तलबगार रहते हैं, उन (की इबादत) की अलामात उनके चेहरों पर सज्दों के असर से नुमायाँ हैं, उन (रसूल और तमाम सहाबा) के ये औसाफ़ तौरात में (भी) हैं और उनकी यह मिसाल इन्ज़ील में (भी) मौजूद है"।

② **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अबू सईद खुदरी का बयान है कि सय्यिदना खालिद बिन वलीद ने सय्यिदना अब्दुरहमान बिन औफ को झगड़े के दौरान गाली दे दी तो रसूलुल्लाह ने खालिद से इर्शाद फरमाया: "तुम मेरे सहाबा को बुरा मत कहो, अगर अब तुम (बाद में इस्लाम लाने वालें) में से कोई शख्स उहद पहाड़ के बराबर सोना खर्च कर डाले तो भी वह उन (पहले मुसलमानों) में से किसी एक के मुद (तकरीबन 600 ग्राम) खर्च करने को नहीं पहुंच सकता है, ना ही उसके आधे को"। [صحیح بخاری : حديث نمبر 3673, صحيح مسلم : حديث نمبر 6488] (सहीह बुखारी: हदीस नं 3673, सहीह मुस्लिम: हदीस नं 6488)

③ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना सईद बिन जैद कूफ़ा की बड़ी मस्जिद में सय्यिदना मुगीरह बिन शौबा को (जो सय्यिदना मुआविया की तरफ से गवर्नर कूफ़ा मुकर्रर थे) मिलने आये। कुछ देर बाद कैस बिन अलकमा वहाँ आया तो सय्यिदना मुगीरह ने उसका इस्तिकबाल किया। फिर मस्जिद में उसी कैस ने सय्यिदना अली को गालियाँ दीं तो सय्यिदना सईद ने सय्यिदना मुगीरह को 3- बार नाम लेकर डाटा और फरमाया कि तुम सहाबी की मजलिस के लोग नबी के सहाबी सय्यिदना अली को गालियाँ दीं और ना तो तुम उनको मना करो और ना ही उनको अपनी मजलिस से निकालो जबकि मैं गवाही देता हूँ कि मैंने खुद नबी से सुना कि अबु बकर, उमर, उस्मान, अली, तल्हा, जुबैर, अब्दुरहमान बिन औफ, सअद बिन अबी वक्रास और एक नवाँ भी जन्नत में हैं। अहले मस्जिद ने की कसम देकर ब आवाज़-ए-बुलन्द पूछा कि नवाँ कौन है? तो फरमाया का नाम बहुत बड़ा है, वह नवाँ आदमी मैं हूँ और दसवें खुद नबी हैं। फिर सय्यिदना सईद ने फरमाया की कसम जो शख्स नबी के साथ किसी एक गजवे में भी शरीक हुआ और उसका चेहरा गुबार आलूद हुआ तो उसका यह अमल तुम लोगों के हर अमल से अफज़ल है खवा तुम्हें सय्यिदना नूह जितनी लम्बी उमर ही क्यों ना मिल जाए"।

[سُنن ابی داؤد : حديث نمبر 4650, مُستدرک احمد : حديث نمبر 1629, 187(1)] (सुन्नन अबी दाउद: हदीस नं 4650, मुस्नद अहमद: हदीस नं 1629, 187(1))

④ **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना मुहम्मद बिन हन्फिया बयान करते हैं कि मैंने अपने वालिद (अमीरुल मौमिनीन सय्यिदना अली से सवाल किया: (इस उम्मत में) रसूलुल्लाह के बाद कौन शख्स लोगों में सबसे अफज़ल है? उन्होंने फरमाया "सय्यिदना अबु बकर" मैंने पूछा उनके बाद कौन? "सय्यिदना उमर"। "फिर मुझे खदशा हुआ कि आप सय्यिदना उसमान का नाम लेंगे इसलिये मैंने कहा तो फिर आप ही हैं? तो आप ने (बतौर इंकिसारी से) इर्शाद फरमाया: मैं तो आम मुसलमानों में से एक आम आदमी हूँ"। [صحیح بخاری : حديث نمبر 3671] (सहीह बुखारी: हदीस नं 3671)

नासबियत का रद्द: चौथे खलीफ़ा सय्यिदना अली के "फजाइल-व-मनाकिब" के महबूब की इसी जिम्न में चन्द सहीह अहादीस मुलाहिजा फरमाएँ:

① **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना सअद बिन अबी वक्रास रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ने सय्यिदना अली को गजवा-ए-तबूक के मौके पर इर्शाद फरमाया: "तुम्हारी मेरे साथ वही मन्जिलत है जो सय्यिदना हारुन को सय्यिदना मूसा से थी मगर यह कि मेरे बाद कोई नबी नहीं है"।

[صحیح بخاری : حديث نمبر 3706, صحيح مسلم : حديث نمبر 6217] (सहीह बुखारी: हदीस नं 3706, सहीह मुस्लिम: हदीस नं 6217)

② **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना सहल बिन सअद कहते हैं कि रसूलुल्लाह ने गजवा-ए-खैबर के मौके पर इर्शाद फरमाया: "मैं कल जरूर उस शख्स को झंडा दूंगा, जिसके हाथ पर फतह देगा, वह शख्स और उसके रसूल से मुहब्बत करता है और और उसका रसूल उस से मुहब्बत करते हैं। जब सुबह हुई तो तमाम लोग इस उम्मीद पर रसूलुल्लाह की खिदमत में हाजिर हुए कि वह झंडा उसे अता किया जाए मगर यह सआदत सय्यिदना अली के हिस्से में आई"।

[صحیح بخاری : حديث نمبر 3701, صحيح مسلم : حديث نمبر 6223] (सहीह बुखारी: हदीस नं 3701, सहीह मुस्लिम: हदीस नं 6223)

2

3 **तर्जुमा सहीह हदीस:** अमीरुल मौमिनीन सय्यिदना अली عليه السلام रिवायत करते हैं: “उस ज़ात की कसम जिसने दाना फाड़ा (और फसल उगाई) और मखलकात पैदा कीं, नबी उम्मी عليه السلام ने मुझे यह अहद दिया था कि सिर्फ मौमिन शख्स ही मुझ (अली) से मुहब्बत करेगा, और मुनाफ़िक शख्स ही (मुझसे) बुग़ज रखेगा”।
[सहीह मुस्लिम: हदीस न० 240] [240 नंबर 3713] [3713 नंबर 3735]

4 **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना ज़ैद बिन अरकम عليه السلام का बयान है: “पहला शख्स जिसने (बचपन में) इस्लाम कुबूल किया वो सय्यिदना अली عليه السلام हैं”।
[जामे तिमिजी: हदीस न० 3735] [3735 नंबर 3713]

5 **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना ज़ैद बिन अरकम عليه السلام रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया: “जिसका मौला (दिली महबूब) मैं हूँ, उसका मौला (दिली महबूब) अली हैं”।

नोट: عليه السلام के प्यारे महबूब عليه السلام की निस्बत की वजह से सय्यिदना अली عليه السلام और तमाम सहाबा عليهم السلام से मुहब्बत करना हर मुसलमान के ईमान का तकाजा है।
[जामे तिमिजी: हदीस न० 3713] [3713 नंबर 3713]

6 **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना सअद बिन अबी वक्रास عليه السلام का बयान है: “जब आयते मुबाहला (सूरह आले इमरान: आयत न० 61) नाजिल हुई तो रसूलुल्लाह ﷺ ने सय्यिदा फातिमा, सय्यिदना अली, सय्यिदना हसन عليه السلام और सय्यिदना हुसैन عليه السلام को अपने पास बुलाया और फिर ﷺ के हुज़ूर अर्ज किया: “ﷺ ये मेरे “अहलियत” (अहले बैअत) हैं”।
[सहीह मुस्लिम: हदीस न० 6220] [6220 नंबर 6220]

7 **तर्जुमा सहीह हदीस:** उम्मुल मौमिनीन सय्यिदा आयशा رضي الله عنها रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने अपनी चादर के नीचे सय्यिदा फातिमा, सय्यिदना अली, सय्यिदना हसन और सय्यिदना हुसैन عليهم السلام को दाखिल फरमाया और फिर यह आयत-ए-मुबारका तिलावत फरमाई:-----

.....إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا ۝ [سورة الاحزاب: آیت نمبر 33] [33 नंबर 33] (सूरतुल अहज़ाब: आयत न० 33)

तर्जुमा सहीह हदीस: “ﷺ सिर्फ यही चाहता है कि ऐ “अहले बैअत” तुम से निजासत दूर करके तुम्हें खूब पाक और सुथरा कर दे”।

[सहीह मुस्लिम: हदीस न० 6261] [6261 नंबर 6261]

8 **तर्जुमा सहीह हदीस:** खलीफा अमीरुल मौमिनीन सय्यिदना अबु बकर सिद्दीक عليه السلام ने इर्शाद फरमाया: “मुहम्मद ﷺ के “अहले बैअत” (से मुहब्बत) में आप ﷺ की मुहब्बत को तलाश करो”।

नोट: सूरतुल अहज़ाब की आयत न० 28 से 33 की रु से बेशक तमाम उम्महातुल मौमिनीन رضي الله عنهن “अहले बैअत” में शामिल हैं।

[सहीह बुखारी: हदीस न० 3751] [3751 नंबर 3751]

सय्यिदना अली عليه السلام की “खिलाफ़ते राशिदा” 100% हक पर थी

ﷺ के महबूब عليه السلام के दामाद अमीरुल मौमिनीन सय्यिदना अली عليه السلام की खिलाफ़त मनहज-ए-नबुव्वत ﷺ पर थी:

1 **तर्जुमा सहीह हदीस:** अमर बिन मैमून ताबई رحمته الله का बयान है: जब अमीरुल मौमिनीन सय्यिदना उमर عليه السلام को जखमी हालत में शहादत से पहले लोगों ने अपना खलीफ़ा बनाने से मतालिक अर्ज की तो आप ﷺ ने इर्शाद फरमाया: मैं इस मामले में इन 6 के अलावा किसी और को खिलाफ़त का अहल नहीं समझता कि जिनसे रसूलुल्लाह ﷺ अपनी वफात तक राजी रहे फिर आप ﷺ ने उनके नाम जिक्र फरमाये: सय्यिदना उस्मान, सय्यिदना अली, सय्यिदना तलहा, सय्यिदना जुबैर, सय्यिदना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ और सय्यिदना सअद बिन अबी वक्रास عليهم السلام, फिर इन 6 सहाबा عليهم السلام में से 4 दस्तबरदार हो गये और फिर सबने मिलकर 2 बाकी बचने वाले सय्यिदना उस्मान عليه السلام और सय्यिदना अली عليه السلام में से सय्यिदना उस्मान عليه السلام को चुन लिया। (पस सय्यिदना उस्मान عليه السلام के बाद खिलाफ़त पर सिर्फ सय्यिदना अली عليه السلام का हक था!) (सहीह बुखारी: हदीस न० 3700) [3700 नंबर 3700]

2 **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना सफीना عليها السلام रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया: “खिलाफ़ते नबुव्वत 30 साल तक रहेगी, फिर जिसे चाहेगा ﷺ अपना मुल्क अता फरमायेगा”। फिर सय्यिदना सफीना عليها السلام ने अपने शागिर्द को खुलफ़ा-ए-राशिदीन की तादाद और मुद्दत गिनकर समझाई: सय्यिदना अबु बकर عليه السلام के दो साल, सय्यिदना उमर عليه السلام के 10 साल, सय्यिदना उस्मान عليه السلام के 12 साल और सय्यिदना अली عليه السلام के 6 साल। शागिर्द ने अर्ज किया: यह खानदाने उमय्या के लोग समझते हैं कि सय्यिदना अली عليه السلام खलीफ़ा नहीं थे बल्कि खिलाफ़त तो उनमें है। यह बात सुन कर सय्यिदना सफीना عليها السلام ने फरमाया: “यह बात बनू मरवान (खानदाने उमय्या) की पीठ से निकला हुवा झूठ है, उनकी हुक्मत तो शदीद तरीन बादशाहत है”।
[जामे तिमिजी: हदीस न० 2226, सुनन अबी दाऊद: हदीस न० 4646] [4646 नंबर 4646]

3 **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर عليه السلام का बयान है: “मैंने इरादा किया कि मैं सय्यिदना मुआविया عليه السلام से कहूँ कि आप से ज्यादा खिलाफ़त का हकदार वह (सय्यिदना अली عليه السلام) हैं, जिन्होंने आप और आपके वालिद رضي الله عنهما से (जब दोनों हालते कुफ़्र में थे) इस्लाम के लिये जंग की थी मगर मैं फितना के डर से खामोश हो गया”।
[सहीह बुखारी: हदीस न० 4108] [4108 नंबर 4108]

सय्यिदना अली عليه السلام “जमल” और “सिफ़ीन” में हक पर थे:

किसासे सय्यिदना उस्मान عليه السلام के मामले में इखितलाफे राय का पैदा हो जाना इन जंगों का असल सबब बना:

जंग-ए-जमल: ﷺ अमीरुल मौमिनीन सय्यिदना अली عليه السلام और सय्यिदा आयशा رضي الله عنها के दर्मियान ﷺ, **जंग-ए-सिफ़ीन:** ﷺ अमीरुल मौमिनीन सय्यिदना अली عليه السلام और सय्यिदना मुआविया عليه السلام के दर्मियान ﷺ

1 **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अबू सईद खदरी عليه السلام रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया: “(मेरे बाद) मेरी उम्मत दो गिरोहों में तकसीम हो जाएगी। (यानी ❶ अमीरुल मौमिनीन सय्यिदना अली عليه السلام और उनके हामी, ❷ अमीरुल मौमिनीन सय्यिदना अली عليه السلام के मुखालिफ़ीन और उनके साथी) फिर इन दोनों (मुसलमान) गिरोहों के अन्दर से एक (तीसरा) फिर्का अलग हो जाएगा (यानी खवारिज), और इस अलग हो जाने वाले फिर्के से (मुसलमानों का) वह गिरोह किताल करेगा जो उस वक्त हक के ज्यादा करीब तरीन होगा”। (सहीह मुस्लिम: हदीस न० 2459) [2459 नंबर 2459]

नोट: अमीरुल मौमिनीन सय्यिदना अली عليه السلام ने ही खवारिज और बागियों को **जंग-ए-नहरवान** में कत्ल किया था:

[सहीह बुखारी: हदीस न० 6933, सही मुस्लिम हदीस न० 2456] [2456 नंबर 6933, सही मुस्लिम हदीस न० 2456]

2 **तर्जुमा सहीह हदीस:** सय्यिदना अबू दर्दा عليه السلام का बयान है: ﷺ ने अपने नबी ﷺ की मुबारक जबान से सय्यिदना अम्मार बिन यासिर عليه السلام को शैतान के रास्ते से महफूज रहने की पनाह अता फरमाई है”। (यानी उनकी राय हक पर होगी) (सहीह बुखारी: हदीस न० 3742) [3742 नंबर 3742]

नोट: सय्यिदना अम्मार عليه السلام तमाम जंगों में अमीरुल मौमिनीन सय्यिदना अली عليه السلام के ही हामी थे:

3 **तर्जुमा सहीह हदीस:** अब्दुल्लाह बिन जियाद अल असदी ताबई رحمته الله का बयान है: “जब (जंग-ए-जमल के मौके पर) सय्यिदना तलहा, सय्यिदना जुबैर, और उम्मुल मौमिनीन सय्यिदा आयशा رضي الله عنها बसरा की जानिब रवाना हुए तो मैंने सय्यिदना अम्मार बिन यासिर عليه السلام को कूफ़ा के मिम्बर पर खुत्बा देते हुए सुना: “सय्यिदा आयशा رضي الله عنها बसरा जा रही हैं और ﷺ की कसम वह दुनिया और आखिरत में तुम्हारे नबी ﷺ की जौजा (बीवी) हैं”।

फिक्रवारियत से बचकर, सिर्फ “कुरआन और सहीउल असनाद अहादीस” को हज्जत व दलील मानने, और झूटी, बे सनद और “ज़ईफ़ुल असनाद तारीखी रिवायात” के फ़ितनो से बचने वालों के लिए

- 3** मगर رضی اللہ عنہا ने तुम्हें आजमाया है कि तुम (अमीरुल मौमिनीन के पीछे) رضی اللہ عنہ की इताअत करते हो या सय्यिदा आयशा رضی اللہ عنہا की”।
(सहीह बुखारी: हदीस नं० 7100) [7100] **صحیح بخاری: حدیث نمبر 7100**
- 4** तर्जुमा सहीह हदीस: सय्यिदना कैस رضی اللہ عنہ का बयान है: “(जंग-ए-सिफ्फीन में) सय्यिदना अम्मार बिन यासिर رضی اللہ عنہ सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ के हामी थे”।
(सहीह मुस्लिम: हदीस नं० 7035) [7035] **صحیح مسلم: حدیث نمبر 7035**
- 5** तर्जुमा सहीह हदीस: सय्यिदना अबू सईद खुदरी رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया: अफ्सोस! अम्मार को एक (इज्तिहादी तौर पर) बागी गिरोह कत्ल करेगा। अम्मार तो उनको رضی اللہ عنہ की (इताअत की) जानिब बुलाएगा और वह जमाअत इसको दोजख की जानिब बुलाएगी”।
(सहीह बुखारी: हदीस नं० 2812, सहीह मुस्लिम: हदीस नं० 7320) [7320] **صحیح بخاری: حدیث نمبر 2812, صحیح مسلم: حدیث نمبر 7320**
- नोट:** जंग-ए-सिफ्फीन में सय्यिदना अम्मार رضی اللہ عنہ, सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ की तरफ से लड़ते हुए, सय्यिदना मुआविया رضی اللہ عنہ के फौजी के हाथों शहीद हुए:
(मुस्नद अहमद: हदीस नं० 16744, 76/4) [76/4, 16744] **مُسْنَدُ أَحْمَد: حدیث نمبر 16744, 76/4**

सय्यिदा आयशा رضی اللہ عنہا और सय्यिदना मुआविया رضی اللہ عنہ की गलती “इज्तिहादी” थी: इस “इन्तिहाई नाजुक” मौजू पर 2 सहीह अहादीस मुलाहिजा फरमाये:

- 1** तर्जुमा सहीह हदीस: सय्यिदना अमर बिन आस رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं की रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया: “जब कोई हाकिम अपने इज्तिहाद से फ़ैसला करे और सहीह फ़ैसले पर पहुँच जाएँ तो उसे दुगना अज़र मिलता है और अगर वो इज्तिहादी खता कर बैठे तो (भी अच्छी नियत पर) उसके लिए एक अज़र है”। (सहीह बुखारी: हदीस नं० 7352, सहीह मुस्लिम: हदीस नं० 4487) [4487] **صحیح بخاری: حدیث نمبر 7352, صحیح مسلم: حدیث نمبر 4487**
- नोट:** जंग-ए-जमल और जंग-ए-सिफ्फीन में अमीरुल मौमिनीन सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ की तरफ से लड़ने वालों को दोगुना और मुखालफीन को भी एक अज़र मिलेगा क्योंकि दोनों तरफ से शरीक सहाबा رضی اللہ عنہ “मुज्ताहद” थे।
- 2** तर्जुमा सहीह हदीस: हसन बसरी ताबई رحمہ اللہ का बयान है: “जब सय्यिदना हसन बिन अली رضی اللہ عنہ सय्यिदना मुआविया رضی اللہ عنہ के खिलाफ़ लड़ने के लिए लश्कर लेकर निकले तो सय्यिदना अमर बिन आस رضی اللہ عنہ ने सय्यिदना मुआविया رضی اللہ عنہ से कहा की मैं अपने हद मुकाबिल ऐसा लश्कर देखता हूँ जो उस वक़्त तक वापस न जायेगा जब तक अपने मुखालफीन को भगा न ले..... (मगर सय्यिदना हसन बिन अली رضی اللہ عنہ ने फरासत से काम लिया और सय्यिदना मुआविया رضی اللہ عنہ से सुलह कर ली तो इस पर) हसन बसरी ताबई رحمہ اللہ ने कहा के मैंने सय्यिदना अबू बकर رضی اللہ عنہ से सुना के नबी ﷺ खुतबह दे रहे थे कि वहाँ सय्यिदना हसन बिन अली رضی اللہ عنہ आये तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: मेरा ये बेटा सरदार है और उम्मीद है के رضی اللہ عنہ इसके ज़रिए मुसलमानों की दो जमाअतों के दरमियान सुलह करा देगा”।
(सहीह बुखारी: हदीस नंबर 7109) [7109] **صحیح بخاری: حدیث نمبر 7109**
- नोट:** अलहम्दुलिल्लाह ﷻ! नबी ﷺ ने दोनों जमाअतों को मुसलमान फ़रमाया। सय्यिदना हसन رضی اللہ عنہ ने अज़ीम कुरबानी दी और सय्यिदना मुआविया رضی اللہ عنہ से सुलह फरमा कर उनकी बैत करली। यूँ बहम खाना जंग खत्म हुई। अब कोई बदबख्त ही सय्यिदना मुआविया رضی اللہ عنہ को गाली देगा। हाँ मगर इबरत के लिए इहताराम के साथ सय्यिदना मुआविया رضی اللہ عنہ की इज्तेहादी गलतियों का बयान करना जाएज़ है और खुद मुहद्दीसीन की कियाबों में इसकी मिसालें दी हैं (सहीह बुखारी: 4108, 4827, 2812, सहीह मुस्लिम 4776, 4061, 6220, जामे तिमिजी: 2226, सुनन अबू दाऊद: 4131, 4648, 4650, सुनन निसाई: 3009) [3009] **صحیح بخاری: 4108, 4827, 2812, صحیح مسلم: 4776, 4061, 6220, جامع ترمذی: 2226, سنن ابی داؤد: 4131, 4648, 4650, سنن نسائی: 3009**

यज़ीदियत का रद्द: मज़लूम-ए-क़र्बला सय्यिदना हुसैन رضی اللہ عنہ के “फ़ज़ाइल व मनाकिब” رضی اللہ عنہ के महबूब ﷺ की इसी ज़िम्न में चंद सहीह अहादीस मुलाहिजा फ़रमाएँ।

- 1 2 3 नोट:** ऊपर बयान करदा खलीफा चहारुम (चार) अमीरुल मौमिनीन सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ के फ़ज़ाइल व मनाकिब में सहीह अहादीस नंबरस: 6, 7, और 8 में सय्यिदना हुसैन رضی اللہ عنہ की शख़िसियत भी शामिल है।
- 4** तर्जुमा सहीह हदीस: “और बेशक (सय्यिदना) हसन और हुसैन (رضی اللہ عنہما) अहले जन्नत के नौजवानों के सरदार हैं”।
(जामे तिमिजी: हदीस नं० 3781) [3781] **جامع ترمذی: حدیث نمبر 3781**
- 5** तर्जुमा सहीह हदीस: “हुसैन मुझसे हैं और मैं हुसैन से हूँ। رضی اللہ عنہ उस से मुहब्बत करे जो हुसैन से मुहब्बत करता है”।
(जामे तिमिजी: हदीस नं० 3775) [3775] **جامع ترمذی: حدیث نمبر 3775**
- 6** तर्जुमा सहीह हदीस: “ऐ लोगों आगाह हो जाओ! मैं भी इन्सान हूँ, करीब है कि मेरे पास मेरे रब का कासिद (मौत का फ़रिश्ता) आये और मैं उसकी बात कुबूल करलूँ। मैं अपने बाद तुम में दो अज़ीम चीज़ें छोड़ कर जा रहा हूँ: ❶ पहली चीज़ तो ﷺ की किताब है, इसमें हिदायत और नूर है, तुम ﷺ की किताब को पकड़ो और उस से ताल्लुक मज़बूत करो। ﷺ की किताब ﷺ की रस्सी है, जिसने उसकी इत्तिबा की वह हिदायत पर है और जिसने उसे छोड़ दिया वह गुमराह हो गया। ❷ और दूसरी चीज़ मेरे अहले बैअत हैं। मैं अपने अहले बैअत के मुताल्लिक तुम्हें ﷺ से डराता हूँ” (यानी उनके साथ अच्छा सुलूक करना!)
(सहीह मुस्लिम: हदीस नं० 6228) [6228] **صحیح مسلم: حدیث نمبر 6228**

सय्यिदना हुसैन رضی اللہ عنہ को इराकी कूफी “नज्दियों” ने “शहीद” किया था: ﷺ के महबूब ﷺ की इसी ज़िम्न में चन्द सहीह अहादीस मुलाहिजा फ़रमाएँ:

- 1** तर्जुमा सहीह हदीस: एक दिन सय्यिदना अली رضی اللہ عنہ, नबी की खिदमत में हाज़िर हुए तो आप ﷺ को रोते हुए पाया तो आप ﷺ से रोन का सबब पूछा? नबी ﷺ ने फरमाया “अभी मेरे पास से जिब्रईल ﷺ उठ कर गये हैं, उन्होंने मुझे बताया कि हुसैन (رضی اللہ عنہ) को फुरात के किनारे शहीद किया जाएगा”।
(मुस्नद अहमद: हदीस नं० 648, 85/1) [85/1, 648] **مُسْنَدُ أَحْمَد: حدیث نمبر 648, 85/1**
- 2** तर्जुमा सहीह हदीस: सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہ से किसी इराकी (कूफी नज्दी) ने पूछा: अगर कोई शख्स एहराम की हालत में मच्छर मार दे तो उसे क्या कफ़ारा देना पड़ेगा? इसके जवाब में सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہ ने इर्शाद फरमाया: इसे देखो, यह इराकी (कूफी नज्दी) मच्छर के खून के बारे में पूछ रहा है, और यह लोग रसूलुल्लाह ﷺ के नवासे को शहीद कर चुके हैं, जिनके बारे में रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फरमाया था: “ये दोनों (सय्यिदना हसन और हुसैन رضی اللہ عنہ) दुनियाँ में मेरे दो फूल हैं”।
(सहीह बुखारी: हदीस नं० 3753) [3753] **صحیح بخاری: حدیث نمبر 3753**
- नोट:** रसूलुल्लाह ﷺ ने इराक़ (नज्द) की तरफ इशारा करते हुए फरमाया: “फित्ना वहाँ से निकलेगा जहाँ से शैतान के सींग निकलेंगे”।
(सहीह मुस्लिम: हदीस नं० 7297) [7297] **صحیح مسلم: حدیث نمبر 7297**
- नोट:** रसूलुल्लाह ﷺ ने नज्दियों के हक में दुआ से इन्कार कर दिया और फिर फरमाया: “वहाँ जलजले होंगे और वहाँ से शैतान का सींग निकलेगा”।
(सहीह बुखारी: हदीस नं० 7094) [7094] **صحیح بخاری: حدیث نمبر 7094**
- 3** तर्जुमा सहीह हदीस: सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہ का बयान है: “एक दिन दोपहर के वक़्त मैंने नबी ﷺ को ख़्वाब में देखा, आप ﷺ के बाल बिखरे हुवे और गर्द आलूद थे और आप ﷺ के हाथ में खून की एक बोटल थी। मैंने अर्ज किया: मेरे माँ बाप आप ﷺ पर कुर्बान, यह क्या है? आप ﷺ ने इर्शाद फरमाया: यह हुसैन और उसके साथियों का खून है, मैं इसे सुबह से इकट्ठा कर रहा हूँ। “रावी कहते हैं हम ने उस दिन को याद रखा तो पता चला कि उसी दिन सय्यिदना हुसैन رضی اللہ عنہ को शहीद किया गया था।
(मुस्नद अहमद: हदीस नं० 2165, 242/1) [242/1, 2165] **مُسْنَدُ أَحْمَد: حدیث نمبر 2165, 242/1**

4 “یجید بن مویا” کوریش کے “خترناک لڈکوں” میں شامل ھا ﷺ کے مہربوب ﷺ کی اسی جمن میں چند سہیہ اہادیس مولاہی فرمائے:

1 **ترجما سہیہ ہدیس:** سدیدنا ابو ہریرہؓ سے ریاات ہے کہ رسولللاہ ﷺ نے إرشاد فرمایا: “مری ممت کی برادی کوریش کے چند نوجوانوں کے ہاتھوں سے ہویگی”۔ فیر بنو مویا کے مران بن حکم سے سدیدنا ابو ہریرہؓ نے کہا: “اگر چاہوں تو ان کے نام بھی بتا سکتا ہوں کہ وہ فلاں فلاں کبیلے سے ہوں گے”۔
(سہیہ بخاری: ہدیس ن 3605) [3605 نمبر حدیث: صحیح بخاری]

نوٹ: سدیدنا ابو ہریرہؓ نے اپنی جان ہفازت کی خاتیر (اور یہ فرت بھی ہے) کوریش (بنو مویا) کے نوجوانوں کے نام اہیر نہیں فرمائے تھے:
(سہیہ بخاری: ہدیس ن 120) [120 نمبر حدیث: صحیح بخاری]

2 **ترجما سہیہ ہدیس:** سدیدنا ابو ہریرہؓ کا خود بیان ہے کہ میں نے رسولللاہ ﷺ سے سنا “70 کی دہائی کے آاا (یا نی 60 سال ااا کے باء) سے اور نوجوان لڈکوں کی حکمت سے ﷺ کی پناہ تلک کروں”۔
(مسند احمد: جلد نمبر 2 صفحہ نمبر 326، حدیث نمبر 8302، [3716 نمبر حدیث: مشکوٰۃ المصابیح: حدیث نمبر 3716]، مسند احمد: جلد نمبر 2 صفحہ نمبر 326، حدیث نمبر 8302، [3716 نمبر حدیث: مشکوٰۃ المصابیح: حدیث نمبر 3716]، مسند احمد: جلد نمبر 2 صفحہ نمبر 326، حدیث نمبر 8302، [3716 نمبر حدیث: مشکوٰۃ المصابیح: حدیث نمبر 3716])

3 **ترجما سہیہ ہدیس:** سدیدنا ابو ہریرہؓ بازار میں لالے ھا یہ دوا مانا کرتے تھے: “اے ﷺ مڈھ 60 والے سال تک باکی نا رلنا، (لوگوں) تومہری خرابی ہو! مویاؓ کی کنپٹیاں مڈھ سے پکڑ لو، اے ﷺ مڈھ لڈکوں کی حکمت تک باکی نا رلنا”۔
(دلیل النبوة للبیہقی: جلد نمبر 7، صفحہ نمبر 363، حدیث نمبر 2801) [2801 نمبر حدیث: دلائل النبوة للبیہقی]

نوٹ: سدیدنا ابو ہریرہؓ کو 60 ہں سے پہلے ہی وفاا پا گئی، جبکہ سدیدنا مویاؓ نے 60 ہں میں وفاا پای اور یں “یجید”
(تمام کتب أسماء الرجال) [تمام کتب أسماء الرجال]

4 **ترجما سہیہ ہدیس:** سدیدنا سہیہؓ نے خاندان-ا-مویا سے متاللیک فرمایا: انکی حکمت شدیء ترین باءشاہت میں سے اک ہے”۔
(جامع ترمذی: حدیث نمبر 2226) [2226 نمبر حدیث: جامع ترمذی]

نوٹ: سدیدنا مویاؓ نے مران کے جریہ سہاباؓ سے “یجید” کے لیے بئات مانگی تو سدیدنا ابورہمان بن ابی بکرؓ نے بھی سڈت موالیفاء فرمائی:
(سہیہ بخاری: ہدیس ن 4827) [4827 نمبر حدیث: صحیح بخاری]

“کسٹنٹونیاں” والی بشاراء “یجید بن مویا” پر چسپا کرنا “لمی لالئی” ہے

1 **ترجما سہیہ ہدیس:** “مری ممت کا پہلا لشکر جو کسیر کے شہر (کسٹنٹونیاں کی فاء) کے لیے اا کرے گا انکی مافیراء کر دی گئی ہے”۔
(سہیہ بخاری: ہدیس ن 2924) [2924 نمبر حدیث: صحیح بخاری]

2 **ترجما سہیہ ہدیس:** “ابو مران اابڈؓ کا بیان ہے: “ہم کسٹنٹونیاں پر ہملے کے لیے روم پلے اور ہمارے امیر لشکر “ابورہمان بن خالید بن ولیدؓ” تھے۔ وهاں سدیدنا ابو اویب انساریؓ نے ہمے اک آااء کی تفسیر سمڈائی فیر آپؓ کی راہ میں اہاء میں شریک ہوتے رھے اور بل آاا کسٹنٹونیاں میں دفن ھا”۔
(سنن ابی داؤء: حدیث نمبر 2512) [2512 نمبر حدیث: سنن ابی داؤء]

3 **ترجما سہیہ ہدیس:** سدیدنا ابو اویب انساریؓ روم میں اسی لشکر میں فاء ھا جس میں امیر لشکر “یجید بن مویا” ھا”۔
(سہیہ بخاری: ہدیس ن 1186) [1186 نمبر حدیث: صحیح بخاری]

نوٹ: کسٹنٹونیاں پر اک سے اااا ہملے ھا تھے اور سدیدنا ابو اویب انساریؓ خود ان تمام لشکروں میں شریک رھے۔ اب آپؓ ابورہمان بن خالید بن ولیدؓ والے لشکر میں تو انا تھے، جبکہ یجید والے لشکر میں آپؓ (54 ہں میں) فاء ھا، اس اہکیک سے بلکل آاسان سا نئیا نکلنا ہے: “یجید والا لشکر کائن پہلا لشکر نہیں ھا، بلکہ وہ تو آااا لشکر ھا”۔

1 **یجید کے 3 سہا کارنامے**
1 جلیلول کء سہابی سدیدنا ابوللاہ بن ابورؓ کے خلاء ماکا مکرما پر ہملا کر کے “بئللاہ” کو آاا لگا کر شہیء کر دیا:
(سہیہ مسلم: ہدیس ن 3245) [3245 نمبر حدیث: صحیح مسلم]
2 “واکآ ہرا” میں یجیدی فاء نے “کآلے آم” کر کے “مآنا مونورا” کی ہمت کو پامال کیا، اور یں سہیہ مسلم کی اہادیس کی ر سے ﷺ کی، فرشوں کی اور تمام انسانوں کی لائناء “کماڈ”: (سہیہ بخاری: 2604، 2959، 4024، اور 4906، سہیہ مسلم: ہدیس ن 3339، 3319، 3323، سے 3333)
(سہیہ بخاری: حدیث نمبر 2604، 2959، 4024 اور 4906، صحیح مسلم: حدیث نمبر 3339، 3319، 3323، سے 3333)

نوٹ: امام اہمء بن ہبلؓ نے شاگرد کو “یجید بن مویا” سے متاللیک فرمایا: “وہ وہی ہے جس نے مآنا والوں کے ساا وہ کرتا کیے جو انا نے کیے”۔ شاگرد نے پلے یجید نے کیا کیا ھا؟ فرمایا: انا نے مآنا کو لٹا ھا۔ انا نے پلے کیا ہم یجید سے ہدیس بیان کر سکتے ہں؟ فرمایا: نہیں، یجید سے ہدیس مات بیان کرو، اور کسی کے لیے ااا نہیں کہ وہ یجید سے اک ہدیس بھی بیان کرے۔ انا نے پلے جب یجید نے یہ ہرکاء کی تھں تو کس نے اسکا ساا دیا ھا؟ فرمایا: اہلے شام نے” (الرد علی المتعصب العنید: صفحہ نمبر 40 (وسندہ صحیح)) (الرد علی المتعصب العنید: صفحہ نمبر 40 (وسندہ صحیح))

3 **ترجما سہیہ ہدیس:** جب سدیدنا ہسینؓ کو شہیء کیا گیا تو آپؓ کا سر مبارک (یجید بن مویا کے چہتے اارنر) ابئللاہ بن ایاء إراکی (کفی نآئی) کے سامنے لاکر رلا گیا تو وہ (بءبڈاء) آپؓ کے سر مبارک کو اا کی ڈی سے کورنے لگا۔ یہ ڈک کر سدیدنا انس بن مالکؓ نے (اس خبیس کو آبیہ کرتے ھا) فرمایا: “ﷺ کی کسم! (سدیدنا) ہسینؓ، (اپنی شکلو سرات کے اءبار سے) رسولللاہ ﷺ کے سب سے اااا مشابہ تھے”۔ (سہیہ بخاری: ہدیس ن 3748، اامے ارمیجی: ہدیس ن 3778) [3778 نمبر حدیث: جامع ترمذی: حدیث نمبر 3748]

نوٹ: انا نے کربلا کے باء یجید بن مویا اپنے کفی نآئی اارنر ابئللاہ بن ایاء کو ساا ن دے کے باڈس خود بھی اس ارم میں برابر کا ہسےءار بن گیا۔
(سہیہ مسلم: حدیث نمبر 6309) [6309 نمبر حدیث: سہیہ مسلم]

★ **ترجما سہیہ ہدیس:** اس اااء کی کسم جس کے کڈے کوراء میں مری ااا ہے کہ ہم اہلے بئات سے جو بڈا رلے گا تو ﷺ انا سے ااا آاا میں ااا کرے گا۔ خا انا ہجرے اساء اور ماکام-ا-إبراہیم کے ارمیان نمااں پڈتے اور رآے رلے مائ آاڈ ہو”۔
(المسارک للحاکم: حدیث نمبر 4717 اور 4712) [4712 اور 4717 نمبر حدیث: المسارک للحاکم]

آاا نسیاء
سہیہ بخاری سہیہ مسلم کے بونااا راویڈ اور مشاھر مہڈس، سدیدنا إبراہیم نکہی آاا کا کائل ہے: “اگر (بل فرت) میں ان لوگوں میں ہوتا انہوں نے سدیدنا ہسینؓ کو کآل (شہیء) کیا ھا، فیر (کاماء کے اءن) مری مافیراء بھی کر دی ااا، اور میں انن میں ااا بھی ہو ااا، تو اس واء (انن میں) رسولللاہ ﷺ کے پاس ااا سے بھی شرم کرتا کہ انا آپؓ مری ارف ڈک ن لے (کہ تو انا میں ہسینؓ کے کائوں کا اامی ھا!)”۔
(المعجم الکبر للطبرانی: حدیث نمبر 2829، 112/3) [112/3، 2829 نمبر حدیث: المعجم الکبر للطبرانی]

نوٹ: ماکممل ہکاڈک ااننے کے لیے ریسرچ پپر نمبر 5-b ااا پڈے: